सत्य मार्ग की खोज, सीरीज़-26

राष्ट्रवाद या विश्वबंधुत्व

जमाअत इस्लामी हिन्द

दावत नगर, अबुल फ़ज़्ल इन्कलेव, नई दिल्ली-110025

9810032508, 9650022638

www.islamsabkeliye.com

www.youtube.com/truepathoflife

राष्ट्रवाद या विश्वबंधुत्व

हम भारतवासियों के संस्कार में यह शिक्षा बसी है:

अयं निजः परोनेति गणना लघुचेतसाम् ।
उदार चरितानान्तु बसुधैव कुटुम्बकम ।।

(मंत्र VI-72, महाउपनिषद / सामवेद)

यह अपना है, यह पराया है, ऐसा मानना संकीर्ण सोच वालों का काम है, उदार हृदय वाले लोग तो पूरी धरती को अपना परिवार और धरती पर बसने वाले सारे मनुष्यों को अपना परिजन मानते हैं ।

हम सब एक कुनबा हैं

धरती ईश्वर का कुनबा है और धरती पर बसने वाला प्रत्येक व्यक्ति उस कुनबे का सदस्य है। ईश्वर ने समस्त मानवजाति को एक ही माता–पिता से पैदा किया है, इसलिए सभी धरतीवासी आपस में भाई–भाई हैं, चाहे वे किसी रंग, वंश, जाति के हों, चाहे वे दुनिया के किसी भाग में रहते हों और चाहे कोई भाषा बोलते हों ।

''लोगो! अपने पालनहार से डरो, जिसने तुमको एक जान से पैदा किया और उसी जान से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत से पुरुष और महिलाएं दुनिया में फैला दिये ।''

(कुरआन, 4:1)

रंग, वंश, जातियां और भाषाएं तो ईश्वर ने इसलिए बनायी हैं कि इनके आधार पर एक दूसरे की पहचान हो सके। ये श्रेष्ठता का आधार तो कदापि नहीं हैं। ईश्वर की दृष्टि में श्रेष्ठ तो वही है, जो उसका अधिक आज्ञाकारी हो। ईश्वर स्वंय कहता है–

''ऐ लोगो ! निश्चित रूप से हमने तुम सभी को परिवारों और वंशों में पैदा किया ताकि आपस में

तुम्हारा परिचय हो, निश्चित रूप से ईश्वर की दुष्टि में तुम लोगों में सबसे श्रेष्ठ केवल वह है जो ईश्वर की आज्ञाओं का अधिक पालन करता है ।''

(कुरआन, 49:13)

देश प्रेम स्वाभाविक है

हमारे देश की परम्परा है :

काले–गोरे का भेद नहीं हर दिल से हमारा नाता है।
कुछ और न आता हो हमको, हमें प्यार निभाना आता है।

यह सही है कि स्वाभाविक रूप से आदमी को अपने जन्म स्थान अपने गांव, शहर और देश से लगाव होता है। इसी तरह आदमी को वह वंश और जाति प्रिय होती है, जिसमें वह पैदा होता है, वह भाषा उसे प्रिय होती है जिसे वह मां की गोद में सीखता है। ये सारे प्रेम और भावनात्मक संबंध स्वाभाविक हैं, अतः महत्वपूर्ण और मूल्यवान हैं। इसी लगाव के आधार पर आदमी अपने देश की सेवा करता है और बलिदान के लिए तैयार रहता है। यह एक तर्कसंगत और न्यायोचित बात है। इसी भावना को देशप्रेम कहते हैं।

राष्ट्रवाद क्या है

बात तब बिगड़ जाती है जब हम अपने देश से प्रेम के साथ दूसरे देश से दुश्मनी को जोड़ देते हैं, बल्कि दूसरे देश से दुश्मनी के बिना हमारा देशप्रेम अपूर्ण रहता है। फिर धीरे–धीरे ऐसा होता है कि अपने देश से प्रेम, उसकी सेवा और उसके लिए बलिदान की भावनाएं तो पीछे रह जाती हैं और दूसरे देश से घृणा, दुश्मनी और प्रतिशोध की भावनाएं प्रबल होती चली जाती हैं। ये भावनाएं हर तरह के नैतिक बंधनों से मुक्त, पूर्णतः स्वच्छंद होती हैं और इसे नाम दिया जाता है राष्ट्रवाद (Nationalism) का ।

राष्ट्रवाद से आशय अपने परिवार, वंश, जाति, समुदाय या देश को सर्वश्रेष्ठ समझना और हर हाल में इनका समर्थन करना और पक्ष लेना है। राष्ट्रवाद के ध्वजावाहकों का सिद्धांत है 'मेरा राष्ट्र ग़लत हो तब भी सही है'। यह सिद्धांत मनुष्य को पूर्वाग्रह और

वैमनस्य में इतना आक्रोशित कर देता है कि वह सत्य और असत्य में अन्तर नहीं कर पाता। हालांकि ईश्वर ने मनुष्य को चेतावनी देते हुए कहा है कि–

"किसी समुदाय की दुश्मनी तुम्हे इतना आक्रोशित न कर दे कि तुम इन्साफ़ से फिर जाओ।"

(कुरआन, 5:8)

जब आदमी सच और झूठ में भेद करने में सक्षम नहीं रहता तो वह कुछ भी कर सकता है और अपने किये को उचित ठहरा सकता है । हालांकि किसी भी आधार पर वैमनस्य, पक्षपात और अन्याय को उचित नहीं ठहराया जा सकता। इस भावना के कारण अशांति और हिंसा फैलती है, हत्या होती है और युद्ध होते हैं ।

राष्ट्रवाद नफ़रत सिखाता है

एक स्थायी सिद्धांत के रूप में राष्ट्रवाद, जिसका प्रचार हाल की सदियों में पश्चिमी दुनिया ने एक विशिष्ट उद्देश्य के तहत व्यवस्थित रूप में किया है, विश्व बंधुत्व के रास्ते की सबसे बड़ी रुकावट है। यह मनुष्य को मनुष्य से नफ़रत करना सिखाता है, आपस में लड़ाता है और मनुष्य और मनुष्य के बीच दीवार खड़ी करता है ।

राष्ट्रवाद पड़ोसी देशों के साथ प्रतिस्पर्धा और संघर्ष से पैदा हुआ है, इसलिए इसमें ये पांच तत्व मुख्य रूप से पाये जाते हैं :

गौरवः अपने राष्ट्र पर गर्व की भावना उसकी परंपराओं और विशेषताओं से प्रेम को भक्ति की सीमा तक ले जाती है और वह अपने राष्ट्र की विशेषताओं में अतिश्योक्ति से काम लेने लगता है यानी अन्य सभी राष्ट्रों की तुलना में मनुष्य अपने राष्ट्र को श्रेष्ठ समझता है और फिर हर तरह के वास्तविक और काल्पनिक गौरव उसके लिए विशिष्ट कर लेता है ।

पक्षपातः मनुष्य चाहे सत्य पर हो या असत्य पर मगर राष्ट्रवाद उसे अपने राष्ट्र का पक्ष लेने पर उभारता है। राष्ट्रीय सम्मान की भावना उसे हर हाल में अपनी जाति का समर्थन करने और उसका साथ देने को प्रेरित

करती है। राष्ट्रवादी सत्य और न्याय के सवाल को अनदेखा करके केवल अपने राष्ट्र का पक्ष लेता है ।

राष्ट्रीय सुरक्षाः राष्ट्रीय सुरक्षा की भावना राष्ट्र के वास्तविक और काल्पनिक हितों की रक्षा के लिए राष्ट्रों को ऐसे उपाय अपनाने को तैयार करती है जो प्रतिरक्षा से शुरू होकर दूसरे देशों पर आक्रमण तक पहुंच जाते हैं ।

दुश्मन की आवश्यकताः चूंकि राष्ट्रवाद में अपने राष्ट्र से प्रेम के साथ –साथ दूसरे राष्ट्र से दुश्मनी का भी बड़ा महत्व है। बल्कि राष्ट्रवाद का प्रदर्शन दुश्मन राष्ट्र के अस्तित्व के बिना संभव ही नहीं है। इसलिए राष्ट्रवाद से प्रेरित देश जनता में राष्ट्रवाद की भावना को बनाए रखने और विकसित करने के लिए अनिवार्य रूप से किसी दुश्मन का भैय पैदा करते हैं, चाहे वह दुश्मन काल्पनिक ही क्यों न हो ।

शक्तिशाली बनने का जुनूनः राष्ट्रवाद से प्रेरित साम्राज्यवाद दूसरों के संसाधन और ख़र्च पर अपनी समृद्धि बढ़ाने पर उभारता है। राष्ट्रवादी पिछड़े देशों में अपनी संस्कृति के प्रसार, उन पर हावी होने और उनकी प्राकृतिक संपदा से लाभ उठाने को अपना अधिकार समझते हैं ।

यह विदेशी मानसिकता है

राष्ट्रवाद की उत्पत्ति प्राचीन अंधकार युग में यूनान में हुई। महान दार्शनिक अरस्तु भी इस संकीर्ण विचारधारा का समर्थक था। वह अपनी किताब 'राजनीति' में लिखता है–''प्रकृति ने असभ्य जातियों को सिर्फ इसलिए पैदा किया है कि वे ग़ुलाम बनकर रहें। असभ्य जातियों के ऐसे क्षेत्रों को ग़ुलाम बनाने के लिए युद्ध किया जाए।'' उस समय के यूनान में असभ्य का अर्थ था ''ग़ैर–यूनानी''। यूरोप में ही राष्ट्रवाद का विकास हुआ। हालांकि एक लंबे समय तक ईसाई धर्म की शक्ति ने इसे रोके रखा। एक ईश्वरीय धर्म होने के कारण ईसाइयत अपने बिगाड़ के बावजूद राष्ट्रवाद और नस्लवाद की जगह एक व्यापक मानवीय दृष्टिकोण रखती है ।

लेकिन ईसाइयत के नाम पर किये गये उत्पीड़न और साम्राज्यवादी अत्याचार के विरुद्ध सोलहवीं सदी में यूरोप में सुधारवादी आंदोलन (प्रोटेस्टेंट) का जन्म हुआ। उस आंदोलन का दुष्प्रभाव यह हुआ कि जो ईसाई समुदाय एक सूत्र में बंधे हुए थे वे बिखर गये और उनके अलग–अलग स्वायत्त राष्ट्रीय राज्य अस्तित्व में आने लगे। हरेक राज्य के हित दूसरे पड़ोसी राज्यों से अलग होते गये। इस तरह राष्ट्रीयता की एक नयी अवधारणा का जन्म हुआ जिसने वैमनस्य की प्राचीन अंधकारयुगीन कल्पना की जगह ले ली। फिर विभिन्न समुदायों/जातियों में विवाद, संघर्ष और प्रतिस्पर्धा शुरू हुई। लड़ाइयां हुईं, अधिकारों का हनन हुआ और हिंसा के निकृष्ट प्रदर्शन किये गये। यहां तक कि राष्ट्रीयता की भावना धीरे–धीरे राष्ट्रवाद में तब्दील हो गयी।

हिटलर ने आगे बढ़ाया

हिटलर ने राष्ट्रवाद की इस भावना को सबसे अधिक बढ़ावा दिया। जर्मनी की सत्ता प्राप्त करने के बाद उसने जर्मन लोगों के मन–मस्तिष्क में यह बात बिठा दी कि दूसरे देशों पर आक्रमण करना जर्मनी का अधिकार है। 1939 ई॰ में हिटलर द्वारा पोलैंड पर हमला ही दूसरे विश्वयद्ध के आरंभ का कारण बना, जिसकी विभीषिका से हम परिचित हैं। हिटलर की आक्रामक नीतियों के कारण उसके कार्यकाल में जर्मन सैनिकों ने एक करोड़ 10 लाख निर्दोष इन्सानों की हत्या की, जिनमें कथित रूप से 60 लाख यहूदी भी शामिल हैं और उन्हीं नीतियों के कारण जर्मनी का विभाजन भी हुआ।

राष्ट्रवाद अस्वाभाविक है

एकता का आधार मानवता है, सारे मनुष्य आपस में भाई–भाई हैं। राष्ट्रवाद की वह अवधारणा जिसका आधार रंग, जाति, भाषा या मातृभूमि हो स्वाभाविक नहीं है, क्योंकि ये सीमाएं एक व्यापक मानव समुदाय की स्थापना में बाधा बनती हैं। राष्ट्रवाद, एक

राजनीतिक व्यवस्था के रूप में, पूरी तरह अमानवीय मूल्यों पर आधारित है। इसके आधार पर एक मानव समूह दूसरे मानव समूह से कट कर रह जाता है। इससे अकारण विवाद पनपते हैं, जो कई बार कीमती मानव जानों की बर्बादी और विनाश का कारण बनते हैं। वांशिक, जातीय, भौगोलिक, भाषाई आदि आधारों पर मानवता का विभाजन ऐसा घातक हथियार है जिसके द्वारा मनुष्य को मनुष्य की ग़ुलामी पर विवश किया जाता है ।

भौगोलिक सीमाओं के आधार पर मानवता का विभाजन करके भी 'लघुचेतसाम्' (संकीर्ण सोच वाले) की तृष्णा की तृप्ति नहीं होती। ऐसे लोग एक राष्ट्र के भीतर भी धर्म, जाति, लिंग, भाषा आदि आधारों पर मानवता को विभाजित करने और आपस में भिड़ाने के कुत्सित प्रयास में जुट जाते हैं। इससे शांति और विकास तो भंग होता ही है, देश में अराजकता और गृहयुद्ध की स्थिति पैदा हो जाती है और देश की अखंडता ख़तरे में पड़ जाती है।

विश्वबंधुत्व

हमारा देश एक ऐसा देश है, जहां सदियों से विभिन्न समुदायों के लोग मिल–जुलकर रहते आये हैं। लम्बे समय तक यहां छोटे–छोटे आज़ाद राज्य रहे हैं, जिनमें विस्तारवादी प्रवृति के राजा एक दूसरे पर आक्रमण भी करते थे, लेकिन आम जनता के बीच नफ़रत और दुश्मनी को कभी हवा नहीं दी गयी। दुर्भाग्य से हमारे देश में भी पिछले कुछ दशकों से राष्ट्रवाद की संकीर्ण सोच को बढ़ावा दिया जा रहा है। जब से सत्तालोलुप राजनीतिज्ञों ने जनता को बांटने और लड़ाने की नीति अपनायी है, देश का वातावरण विषाक्त हो गया है । कुछ प्रतीकों को देशभक्ति का पर्याय बताकर ऊपर से थोपा जाता है और इसकी आड़ में एक वर्ग को दूसरे के ख़िलाफ़ खड़ा किया जाता है। हमें इन चालों को समझने की ज़रूरत है। इतिहास से भी हमें सीख लेनी चाहिए।

यह अति–राष्ट्रवाद है जिसने मानव जाति को विश्व पर खींची गई 'भू–राजनीतिक रेखाओं' के आधार पर विभाजित कर दिया है। यह रेखाएं केवल राजनीतिक और प्रशासनिक उद्देश्यों के लिए थीं और इनका उद्देश्य मानवता की बेहतर, पेशेवर तरीके से सेवा करना था न कि राष्ट्रों के बीच घृणा, वैमनस्य और सर्वकालिक तनाव पैदा करना।

इस्लाम सदियों से दुनिया में व्याप्त राष्ट्रवाद पर आधारित झगड़े, घृणा और वैमनस्य का स्थायी और सबसे प्रभावी समाधान प्रस्तुत करता है और समस्त मानव जाति को एक ही माता–पिता की संतान मानकर विश्वबंधुत्व का सार्वभौमिक दृष्टिकोण प्रदान करता है। एक ही रक्त सभी की धमनियों में प्रवाहित है और ईश्वर ने इसी के माध्यम से सबको आपस में भाई–बहन के रिश्ते से जोड़ दिया है। इससे अधिक प्रभावशाली और अद्भुत भी क्या और सम्बन्ध हो सकता है? हम यदि वास्तव में प्यार, करुणा, एकता, न्याय और शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व से परिपूर्ण समाज की स्थापना करना चाहते हैं, तो हमें इस्लाम की इस अनमोल भेंट पर अवश्य विचार करना चाहिए।

और हमें ''राष्ट्रप्रेम" और "राष्ट्रभक्ति" (राष्ट्रवाद) के बीच भ्रमित होने से बचना चाहिए। भक्ति केवल परमेश्वर, अल्लाह को अर्पित की जाती है। राष्ट्र को ईश्वर या अल्लाह का दर्जा नहीं दिया जा सकता। राष्ट्र, देश या मुल्क ईश्वर से ऊपर नहीं है। हमें राष्ट्रप्रेम और ईश्वर, अल्लाह की भक्ति के बीच अंतर करना चाहिए। इसी अंतर के कारण, इस्लाम राष्ट्र की भक्ति को ''शिर्क'' (बहुदेववाद) मानता है।

राष्ट्रवाद की संकीर्ण सोच से निकल कर विश्वबंधुत्व का प्रयास करना ही सच्चा देशप्रेम है। इस्लाम इसी विश्वबंधुत्व और देश प्रेम की शिक्षा देता है और इसी की ध्वजावाहक है।

इस फ़ोल्डर में अध्यात्मिक, नैतिक और चारित्रिक बातें हैं,
कृप्या इसको इधर-उधर न फेंकें, धन्यवाद
dawah.jih@gmail.com